सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून, 2017

विजयी जीवन

यीशु

'और मैं, यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब लोगों को अपने पास खीचूँगा। (यूहन्ना 92:32)'

यीशु क्रूस पर होने वाली अपनी मृत्यु की बात कर रहे हैं – दूसरे धर्मों में और मसीही धर्म में अंतर - मृत्यु और यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। यह सत्य और प्रायश्चित तुम किसी दूसरे धर्म में नहीं पाओगे...

सभी लोगों ने पाप किया है। उन्होंने जन्म से पापी स्वभाव पाया है। आदमी ने अपने द्वारा किए गए पापों और पापी स्वभाव से मुक्ति पाने के लिए बहुत कोशिश की है। वह, जिसने प्रथम आदम की सृष्टि की, उसी ने दूसरे आदम (प्रभु यीशु मसीह) को इस संसार में पापी लोगों का उद्धार करने के लिए भेजा। यीशु, दूसरे आदम, ने एक पवित्र, निष्पाप और सिद्ध जीवन जीया और क्रूस पर मरने के लिए लटकाया गया कि हमारे पापों के लिए

विजयी जीवन... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

इस कारण मैं उस पिता के समक्ष घुटने टेकता हूँ ... कि उसकी अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवान होते जाओ। (इफिसियों 3:4-19)

यीशु हमारे लिए उनकी महिमा का धन लाते हैं। जब आप मसीह के पास आते हो, तो आप एक खाली कब्र के सामने अपने आपको खड़ा पाते हो। 'मदीना' में आप मुहम्मद की कब्र पाओगे। इतिहास के महान जन सब अपनी-अपनी कब्रों में दफन है। मगर यीशु की कब्र उनको दफन ही नहीं रख पाई। यीशु की कब्र खाली है। खाली कब्र ही यीशु के जीवन की महिमा का वर्णन करता है। उनका जीवन ऐसा था कि कब्र उसे दफन नहीं रख सका। हम पहले उस कब्र के पास जाते है क्योंकि हम विश्वास करते है कि वह हमारे लिए मरे हैं। यदि क्रूस पर उनकी मृत्यु ना हुई होती, हमारे और आपके पास कोई आशा नहीं होती। वह पवित्र है, मगर हम अपवित्र है। उन्होंने हमारी जगह ले ली और 'हमारे' लिए मर गए। इस विश्वास के साथ जब हम उनकी कब्र के पास खड़े होते हैं, एक महान अनुग्रह आकर हमें अभिभूत कर देता है। हम अनुग्रह ही के द्वारा मुफ्त बचाये गये हैं।

एक समय पर, हम परमेश्वर से डरते थे, और विश्वास करते थे कि, अगर हम उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो हम उनका आशीर्वाद पायेंगे। एक समय था, जब हममें से हर एक उनके सामने थरथराता था। मगर अब, उनके अनुग्रह और प्रेम को देख हम अचंभा करते है। और उसी अनुग्रह से एक सामर्थ्य निकलता है जो हमारे हृदय में भर जाता है। 'उसके आत्मा के द्वारा अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवान होते जाना।'

आप समझ नहीं पाओगे कि अब आप एक पवित्र जीवन कैसे जी पा रहे हो। ऐसा जीवन जीने के लिए वह सामर्थ्य ही आपको आगे बढ़ा रहा है। आप मर गये होते, मगर आप के बदले में यीशु ने आपकी जगह ली और कब्र में दफनाये गये। उस महिमा के धन को उन्होंने आपके लिए मुक्त किया।

इफिसियों (4:8) इस प्रकार कहता है। 'इसलिए वह कहता है, 'जब वह ऊँचे पर चढ़ा तो बन्धुओं के समूह को बन्धुवाई में ले गया और उसने मनुष्यों को दान दिए।' वह बन्धुओं के समूह को बन्धुवाई में ले गया। यह कितना अद्भुत कथन है। हम शैतान के बंदी थे, मगर यीशु ने शैतान को हराया और हमें रिहा किया।

जब उन्होंने बन्धुओं के समूह को बन्धुवाई में ले लिया, और उनको दान दिया – ऐसे दान जिसे देख लोग अचंभित

होते हैं। और यकीनन जानते कि वे परमेश्वर द्वारा दिये गये है ना कि मनुष्यों के द्वारा। जब यीशु के नाम से चेलों के द्वारा चंगा किये जाने पर लंगडे आदमी को चलते-उछलते देखा तो याजक विस्मय से भर गये और कुछ नहीं बोल पाये।

चलिए हम कब्र पर चलें और विश्वास करें। महिमा का धन दिया जा रहा है – एक नयी प्रवृति। यीशु परमेश्वर की इच्छाओं के बीचोंबीच रहे। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर की इच्छा में बने रहने के लिए स्वयं को नियंत्रित करता है। वह परमेश्वर प्रदत्त सम्पूर्ण स्वतंत्रता को बहुतायत से पाएगा। क्या परमेश्वर की इच्छानुसार जीने में आप कुड़कुड़ाते हैं? क्या आपको इस बात का दुःख है कि परमेश्वर की इच्छा आप पर बहुत ज्यादा प्रतिबंध लगा रहीं है? क्या ये प्रतिबंध आप पर इसलिए नहीं लगाये गए कि आप को जो दान मिले हैं उनका इस्तेमाल महान तरीके से हो?

अब यह कौन है जो सारी प्रधानताओं और सामर्थ्य के ऊपर है? यह वही हैं जिसने परमेश्वर की इच्छा में बने रहने के लिए अपने आपको अंतिम हद तक नकारा। यदि आप वैसा करते है, आप भी ऊँचा उठाये जायेंगे। यदि अचानक आपको कोई आवश्यकता आन पड़े, आप तुरन्त उसे पूरा होते देखेंगे। एक नम्रता, धैर्य और प्रेम का आत्मा आपको भर देगा। यही महिमा का धन है। इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?

जो कब्र पर आते हैं, विश्वास करते हैं और परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं वे देखेंगे कि परमेश्वर का धन उनके लिए खुला हुआ है – हाँ, परमेश्वर की सारी परिपूर्णता। हम विश्वास नहीं करते है और इसलिए परमेश्वर की सारी सम्पूर्णता को हम प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जब आप परमेश्वर के असीमित प्रेम से भर जाते हैं, पूरी पृथ्वी आपकी है। सारे मनुष्य आपके पास आयेंगे। जब वे आप में मसीह का निस्वार्थता और मसीह के आत्मत्याग को देखते हैं, सत्य और धार्मिकता के विषय में मरने तक की तैयारी को वो आपमें देखते है। तब पूरी दुनिया आपके पास आयेगी। संसार ऐसी महिला को देखना चाहता है जो परमेश्वर की महिमा के धन से भरी हुई हो और ऐसे पुरुष को जिसने परमेश्वर के प्रेम की गहराईयों को मापा है।

परमेश्वर की इच्छा करने में महान आजादी है। बहुत कठिन परीक्षण का सामने करते समय, कई मिशनरियों ने अविश्वासनीय चमत्कारों को देखा है। वह जो मुर्दों में से जी उठा, आपको कभी नहीं त्यागेगा। यह आपकी कल्पना, आपकी सोच से परे है कि परमेश्वर के पास आपके लिए क्या है? वह उस सामर्थ्य के अनुसार होगा, वही सामर्थ आप में कार्य कर रहा है। परमेश्वर की योजना आप पर प्रकट होगी। आपकी जरूरत के अनुसार परमेश्वर आपको दान देगा और ये दान उनकी इच्छा पूरी करने में आपकी मदद करेंगे। जबकि आप उस कब्र में देख रहें हो, यह विश्वास करते देख रहे हो कि मसीह आप के लिए मरे, तो अधिक और अधिक दान उससे निकलेंगे और आपके पास आयेंगे।

- जोशुआ दानिएल ।

विजयी जीवन.. पृष्ठ 1 से

प्रायश्चित करे। पापी स्वभाव से छुटकारा दिलवाए, वह जो क्रूस पर कीलों से ठोका गया, उसने हमें भी अपने क्रूस पर बुलाया है। यहाँ, उसके साथ हमारे पापी स्वभावों को भी ठोका गया था। यीशु पापियों को अपने क्रूस के पास इसलिए बुलाता है कि वे उसकी मृत्यु द्वारा अपने पापों की सजा की क्षमा प्राप्त कर सकें। इसके पश्चात, वह उन्हें अपने साथ एक क्रूस पर चढ़ा जीवन जीने को बुलाता है कि वे पापी स्वभाव से छुटकारा पाएँ। इस संसार में कोई दूसरा नहीं जीया जो निष्पाप हो। वह परमेश्वर का मेमना अपने शरीर पर हमारे पापों को लेकर क्रूस पर गया और मरा। वह दूबारा जीवित हो उठा, पाप माफ़ करने के अधिकार के साथ। किसी दूसरे व्यक्ति को हमारे पाप माफ़ करने का अधिकार नहीं मिला है।

मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ना।

एक और अनुग्रह उन लोगों को प्राप्त है जो क्रूस को निहारते हैं। शारीरिक लालसाएँ मर जाती हैं। अपनी इच्छा-शक्ति द्वारा अपने शरीर को तीव्र कष्ट देना, अपने गले को रस्सी से घोंटने के समान है। इस प्रकार यदि तुम कब्र में भी जाओ तो भी तुम्हारे पाप और पापी स्वभाव तुम्हारे अन्दर रहता है। यदि तुम अपने शरीर को भूखा रखो और इसे कमज़ोर बनाओ, तुम्हें ऐसा लगेगा कि शरीरिक लालसाएँ मर गई हैं। लेकिन वे फिर भी वैसी की वैसी हैं। जब बारिश के पानी की कमी के कारण भूमि की ऊपरी परत सूखी हो, तो जो बीज उसमें दबे हैं, वे अंकुरित नहीं होते। जो

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

अपने शरीर को सुखाने की कोशिश करते हैं उनकी स्थिति वैसी ही है।

यीशु का क्रूस ही हमारा इलाज है। 'कि पाप हमारे नश्वर शरीर में शासन न करे, पुराना स्वभाव मसीह के साथ क्रूस पर ठोका हुआ है।' यदि हम मसीह के साथ मरते हैं तो उसके साथ जीयेंगे भी। अर्थात यदि विश्वास के द्वारा, आत्मसमर्पण करे और मसीह की मृत्यु में सहभागी बने, पापी शरीर, पाप के लिए मर जाता है। पाप हमारे पर शासन नहीं कर पाएगा। विश्वास द्वारा हमने मुक्ति पाई है। और दुबारा विश्वास द्वारा हम उसमें क्रूसित हुए हैं। हम, जो एक समय अपने आप को पूरी रीति से पाप में लगाए थे, अब पाप से छुटकारा पाए हैं कि अब संपूर्ण मन से धार्मिकता के सेवक बनें। इसका परिणाम यह निकलता है कि पवित्रता हमारा भाग ठहरता है। इसका लाभ अनंत जीवन है।

यह अद्भुत अनुभव है जो विश्वास के द्वारा हम पाते हैं। क्या हमने यीशु मसीह में नया जन्म पाया है? यदि ऐसा है, तो यह अच्छा है। लेकिन क्या तुम यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े हो? इस शरीर द्वारा हम संसार के संपर्क में आते हैं और सांसारिक इच्छाएँ हमारे अंदर प्रवेश करती हैं। ये लालसाएँ हमारी इच्छा शक्ति को काबू में कर हमारी आत्मा पर नियंत्रण करने की चेष्टा करती हैं। इस धरती पर कोई ऐसी ताकत नहीं जो हमें इस गुलामी से छुड़ा सके। हमें अपने को आत्मा पवित्र आत्मा के नियंत्रण में कर देना चाहिए। जिसने हमें आत्मिक जीवन दिया है। हमारी इच्छा शक्ति भी पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहनी चाहिए। यह बदलाव, नया जन्म कहलाता है। हर व्यक्ति जिसने मन फिराया है अपनी इच्छा शक्ति को आत्मा के नियंत्रण में करता है, जो पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलता है। जब हम मसीह के साथ क्रूस का अनुभव करते हैं, हमारी इच्छा शक्ति जो सांसारिक इच्छाओं की गुलाम थी, अब परमेश्वर की इच्छा के साथ मिल जाती है। जब हम प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के साथ मिल जाती है। जब हम प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के वचन पर भरोसा करते हैं, हमारा अंतःकारण जो परमेश्वर के आत्मा द्वारा सिखाया जाता है, हमारी इच्छा शक्ति को नियंत्रित कर परमेश्वर की राह में लगा देता है।

यीशु का यही मतलब है जब उन्होंने कहा कि यदि वे पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जायेगा, तो सब लोगों को अपने पास खींचेंगे। उनका अर्थ यह था कि वे सब लोगों को धार्मिकता और उनकी सिद्धांत में खींचेंगे। अपनी पवित्रता और प्रेम में सब लोगों को खींचेंगे। क्रूस पर चढ़ा मसीह ऐसा करने में समर्थ है। यह एक स्वर्गीय चुंबक है जो पाप में गिरे इनसानों को उच्चतम जीवन में आकर्षित करता है। यह एक सामर्थ्य है जो मनुष्यों को स्वार्थ रहित और विजयी जीवन में खींच लेता है। जब तुम क्रूस की ओर देखोगे, तुम्हारी पराजय दूर हो जाएगी और विजय द्वारा बदल दी जाएगी। जब तुम क्रूस पर मनन करते हो, तुम्हारे भद्दे स्वभाव के स्थान पर पवित्र इच्छाएँ आ जाएँगी।

इस प्रकार जब तुम ऊँचे उठाए गए हो तो दूसरों को भी ऊँचा उठओगे। वह मसीह के साथ क्रूस पर ऊँचा उठाया जाता है, दूसरों को आकर्षित करने के लिए वह सामर्थी बनता है। उसके चारों ओर आत्मिक आकर्षण बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे तुम अपने हृदय को पर्याप्त रूप से परमेश्वर के वचन बाइबल से भरते हो, तुम्हारा आंतरिक भाग जो तुम्हारी इच्छा को नियंत्रण में रख सकता है और अधिक बलवान होता जाएगा। जैसे, परमेश्वर के वचन का आज्ञापालन तुममें बढ़ता जाता है, दूसरों को आकर्षित करने का बल तुम्हारे अंदर बढ़ता जाता है। यदि लोहे के साधारण टुकड़े को चुंबक के साथ चिपका कर थोड़े समय के लिए रखा जाए तो वह चुंबक बन जाता है। जब तुम क्रूस की ओर देखते हो, तुम एक आत्मिक चुंबक में बदल जाते हो। तुम दूसरे साधारण लोहे के टुकड़ों को अपनी ओर खींचोगे।

मसीह के साथ ऊँचा उठना।

जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हैं वे उसके साथ पुनरुत्थान में भागी होंगे। ऐसे लोगों के लिए हार नहीं है। जब यीशु क्रूस पर मरा, उसने संसार पर संपूर्ण विजय प्राप्त की और दुश्मन की सारी ताकत से ऊँचा उठा। जो उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में भागी होते हैं, उसके अधिकार में भी सहभागी होते हैं। कृपया रोमियों का छठा अध्याय सौ बार पढ़ो और उस पर मनन करो। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में परमेश्वर द्वारा सहभागी रहो, एक देह जो पाप के लिए मरी हुई और आत्मा जो परमेश्वर के लिए जीवित है। तब हर स्थान पर जहाँ-जहाँ तुम्हारे कदम पड़ेंगे, तुम विजय देखोगे।

हे मसीह, क्या तुमने अपने गाँव को मसीह के लिए जीता है? यदि तुम वास्तविकता में यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े हो और मृत्यु में भागी हुए होते तुम ज़रूर अपने कस्बे को मसीह के लिए जीत लोगे। दूसरों को देखकर तुम्हारे ध्यान नहीं बँटेगा बल्कि तुम प्रार्थना करोगे, अपने चारों ओर प्रार्थना समूह तैयार करो और तब तक निवेदन करो जब तक कस्बे को मसीह के लिए जीत न लो। चाहे, तुम एलिय्याह की तरह अकेले ही क्यों न हो, तुम फिर भी जीतोगे या फिर नहेमायाह की भाँति मंडली के साथ काम करोगे तो भी जीतोगे। जहाँ कहीं से भी तुम गुज़रोगे मसीह की महिमा हर स्थान पर दिखाई देगी। तुम मसीह के साथ सहकर्मी बनोगे।

चमत्कारी फल।

प्रेम, विश्वास, नम्रता और पवित्रता तुम्हारे जीवन से अपने आप दिखाई देगा। पवित्र आत्मा का फल उनके जीवन में आता है जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हों। तुम अपने पारिवारिक जीवन में विजय देखोगे।

तुम अपने भटके हुए बच्चों को दुबारा वापस पा लोगे। जब तुम प्रार्थना कर रहे होगे, तुम्हारी आत्मिक शक्ति भटके हुओं के जीवन में काम करेगी। यह तुम्हारी पत्नी के जीवन में काम कर सकती है, तुम्हारे पति के जीवन में काम कर सकती है। जब तुमने मन फिराया था तब प्रभु ने तुम्हें एक शुद्ध हृदय और शुद्ध विवेक दिया था, तुम्हें क्रूस पर चढ़ना चाहिए। पौलुस इस अनुभव के विषय में गलातियों की पुस्तक में व्याख्या करता है – गलातियों (2:20) 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। अब मैं जीवित नहीं रहा, परंतु मसीह मुझ में जीवित है, और अब जो शरीर में जीवित हूँ, तो केवल विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।'

अब आप अपनी विरासत, सुहावने स्थानों पर ही पाओगे। अत्यंत अनमोल मिरास आपकी हो जायेगी। आप अपनी आशा को हमेशा के लिए मसीह के क्रूस में लगाओगे। आपका दाहिने हाथ, आपकी आत्मा आपके उद्धारकर्ता प्रभु में आनन्दित होगी। जीवन के मार्ग में आप चलोगे। आप यीशु में आनन्द की भरपूरी का मजा लोगे। पवित्र आत्मा के फल से भरपूर रहोगे। आप पापियों को मसीह की ओर आकर्षित करोगे।

- एन दानिएल

वापस लौटाने की ज़रूरत

तुम ने अगर कभी भी बेईमानी से पैसे लिये हो और वापस नहीं किये हो – तब तक, तुम्हें परमेश्वर से यह प्रार्थना करने की कोई जरूरत नहीं है कि वह तुझे माँफ करें और तुझे पवित्र आत्मा से भर दे, जब तक तुमने उन पैसों को वापस न लौटाया हो। अगर तुम्हारे पास वापस करने के लिए अभी पैसे नहीं है, मगर तुम वापस करना चाहते हो, परमेश्वर, वापस करने के लिए तैयार इच्छुक मन को स्वीकार करते है।

कई लोग अन्धकार और अशान्ति में जी रहे हैं। क्योंकि इस विषय में वे परमेश्वर की मानने में असफल हैं। अगर तुम्हारा पश्चाताप सही है और हल गहराई में पहुँचा है, तो वह जरूर फल लायेगा। अगर मैं ने किसी व्यक्ति के साथ गलत किया है या गलत तरीके से किसी से कुछ लिया है, जब तक मुझ में जक्कई की तरह, उसे सही करने की चाह न हो- परमेश्वर के पास आने का क्या लाभ है? स्वीकार करना और वापस करना, माफ़ी पाने की ओर ले जाने वाली सीढ़ियाँ है।

मेरा एक दोस्त था जो मसीह के पास आया था। वह अपने आप को और अपनी सारी संपत्ति परमेश्वर को समर्पित करने की कोशिश कर रहा था। वह पहले सरकार के साथ लेनदेन रखता था। और उसका गलत फायदा उठाया था। यह बात उसे याद आयी और उसकी अन्तरात्मा उसे दोषी ठहराने लगी। वह कम पैसे सरकार को अदा करता था। अन्त में उसने बाकी रकम का का चेक लिखा और सरकार के कोषागार में भेज दिया। उसने मुझ से कहा कि ऐसा करने के बाद उसे बहुत आशीष मिली है। यही पश्चाताप के फल लाना है। मुझे यह विश्वास है कि बहुत ही अधिक संख्या में आदमी, प्रकाश पाने कि लिए परमेश्वर को पुकार रहे हैं। और अधिकतर लोग उसे नहीं पा रहें हैं। क्योंकि वे ईमान्दार नहीं है।

एक आदमी हमारी सभाओं में आया था। वापस करने के विषय पर उस सभा में बातें हुई थी। एक बेईमानी के लेन-देन की याद उसके मन में कौंधी। तुरन्त उसे यह आभास हुआ था कि कैसे उसे प्रार्थना का जवाब नहीं मिल रहा था। जैसे पवित्रशास्त्र कहता है, बिना जवाब प्रार्थना वापस उसकी गोद में लौट आयी, वह सभा छोड़ कर चला गया। सीधे वह रेलगाडी पकड़ कर एक दूर शहर में गया। वहाँ उसने बहुत साल पहले अपने मालिक के साथ कपट किया था। वह सीधा उस आदमी के पास गया। उसने उसके सामने अपनी गलती को मान लिया। और पैसा वापस करने का प्रस्ताव रखा। तब उसको एक और लेनदेन याद आया। वह अपने ऊपर आयी एक सही माँग को पूरा करने में असफल रहा था। उसने तुरन्त एक बहुत बड़ी रकम को वापस करने का इन्तजाम किया। वह दुबारा उस जगह पर आया जहाँ हम अपनी सभाओं का आयोजन कर रहे थे। परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रीति से, उसके आत्मा में बहुत आशीष दी। बहुत समय से मेरी मुलाकात ऐसे आदमी से नहीं हुई है, जिनको ऐसी आशीष मिली हो।

जब मैं केनेडा में था, एक आदमी ने मुझ से कहा कि जब वह छोटा था, एक आदमी ने उसे गलती से एक सिक्का दिया था। केनेडा में वह दस शिलेंग कहलाता था। वह डालर के सिर्फ पौने भाग का होगा और सोने का था। उस लड़के को निर्धारित, चाँदी की शिलेंग देने के बजाय, उस आदमी ने उसे सोने का दस शिलिंग गलती से दे दिया। उस लडके ने उसको रख लिया। अगले दिन वह आदमी उस लड़के के पास लौटा और बोला, 'कल जब मैंने तुम्हे रेजगारी दी थी, क्या मैं ने तुमको एक शिलिंग के सिक्के के बदले दस शिलिंग का सिक्का नहीं दिया?' उस लडके ने झूठ बोला, 'नहीं, साहब, आप ने नहीं दिया।'

सत्य की परख!

'अब आशा का परमेश्वर तुम्हें विश्वास करने में सम्पूर्ण आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, जिस से पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।
(रोमियों 15:13)

43 साल तक उस आदमी की अन्तरात्मा पर इस झूठ का बोझ था। आखिर में परमेश्वर के आत्मा का प्रभाव उस पर आया और वह मसीही बन गया। वह अब नहीं जानता था कि उस आदमी को कहाँ ढूँढे। इसलिए उसने ब्याज का अनुमान लगाया और सूद समेत मूल को एक आनाथालय में दे दिया। आखिर में उसने इस झूठ को अपनी अन्तरात्मा से हटाया। अगर तुम्हारे अन्तरात्मा में कुछ गलत है उसे तुरन्त सीधा करो। अगर तुम्हारा मन किसी बीते लेन-देन पर जाता है जिस में तुमने अपने पडोसी के साथ छल किया है, तुरन्त उसे एक-एक पैसा वापस करो।

- डि.एल.मूडी

पूरी तरह से मरना

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध की बात है। मॉलडन, मैसाचुसेट्स (उत्तरी अमेरिका) के एक पड़ोस में अकालिक-प्रौढ़ एक चार साल का लड़का, वो सारे बच्चों को इकट्ठा करता था। कारण यह था, वह 'चर्च' का खेल खेलना चाहता था और वह उसमें कार्यवाहक पादरी। उसका प्रिय गाना, तब भी थाः 'गो प्रीच दा गॉस्पल, सेथ दा लॉर्ड।' बाद के वर्षों में वह बालक, सारे सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करने का, यीशु मसीह के उस आदेश का पालन करता – मगर पहले परमेश्वर रहित उस दुनिया के अंधेरे पहलू को देखे बगैर नहीं।

अंधेरे पहलू की ओर - मौत

सन 1788, में जन्मे अदोनिराम जडसन का पालन-पोषण एक ईसाई परिवार में हुआ। बाद में उसके जीवन में यह देखा गया कि 'वह सन्त अगस्टीन के साथ सचमुच कह पाता, 'हे पिता आपका पुत्र जो मेरा उद्धारकर्ता है, उसने मेरे कोमल हृदय को अपने वश में किया ... उन्हें भक्ति पूर्वक मैं उन्हें अपनाता और गहराई से उन से प्रेम करता। और जो कुछ उसके नाम से जुड़ा ना हो, चाहे वह कितना भी आकर्षक या सच्चा हो, वह मुझ पर प्रभाव डाल कर मुझे खींच पाये, ऐसा तो कभी नहीं हुआ।' सन 1804 में, वक्त से एक साल पहले, उसने प्रॉविडेन्स कॉलेज (जो बाद में ब्राउन युनिवर्सिटी कहलाता है) में दाखिला लिया।

जब वह अभी भी किशोर अवस्था में था तब एक दिन, अदोनिराम धार्मिक व्यवस्था को अपनाने के बारे में सोचने लगा। सुसमाचार प्रचार करने वाले विनम्र पादरी के बारे में वह सोचने लगा, जो साथी – लोगों का हित करने और सिर्फ परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कार्य करते है। कब्र पर विजय पाकर, अनन्तता में प्रवेश करते समय उसका कैसा वैभव होगा। मगर अचानक यह शब्द उसके मन में छा गयेः 'हमारी नहीं, हमारी नहीं वरन आपके ही नाम की महिमा हो।' उसने खतरनाक जगहों पर कदम रखा था और उसमें उमडते भवानाओं के बहाव से वह चौंक गया। वह मसीही नहीं बनना चाहता है – शायद इस बात का एहसास हो जाये, इस डर से वह अपने दिल में झाँकना नहीं चाहता था। मगर उसने एक महान आदमी बनने का संकल्प किया। कालेज में पढ़ाई करते समय, अदोनिराम ने, जेकोब ईम्स नामक नौजवान के साथ एक मजबूत और प्रभावशाली दोस्ती करने लगा। जेकोब ईम्स एक स्वतंत्र विचारों वाला युवक है और कई शंकास्पद मनोरंजनों में वह व्यस्त रहता। जल्द यह लगने लगा कि वह भी अपने दोस्त की तरह अविश्वासी है। अदोनिराम के मत भावों को जानने पर उसके पिताजी ने उसे गंभीरता से दंडित किया। उसकी माँ ने रोते हुए चिताया; जहाँ भी वह जाता यह बात उसका पीछा करतीं जबकि वह उत्तरी अमेरिका के क्षेत्रों का दौरा कर रहा था। जिस तरह की जिन्दगी से वह गृणा करता था, वह जानता था कि उसी में गिरने के कगार पर वह है। फिर भी, 'मुझे कोई खतरा नहीं है।' अपने आप में वह सोचता, 'मैं सिर्फ दुनिया दारी देख रहा हूँ – उसका अंधेरा पेहलू साथ ही साथ उसका उज्जवल पक्ष भी; मुझ में इतना आत्मा सम्मान है कि मैं कुछ भी भ्रष्ट या खराब काम, कर ही नहीं सकता।'

उस यात्रा के दौरान, अदोनिराम ने एक देशी सराय में एक रात बिताई। सराय के मालिक ने कहा कि उसको उस कमरे में रहना पड़ेगा जिसके बगल वाले कमरे में एक नौजवान है जो बुरी तरह से बीमार है; शायद वह मरने पर है। मगर उसने आशा व्यक्त की कि इससे जडसन को कोई तकलीफ ना होगी। जडसन ने उसे आश्वासित किया कि बेचारे उस बीमार व्यक्ति के प्रति दया के सिवाय वह कुछ आकुलता महसूस नहीं करेगा। और जितना नजदीक है उसके हिसाब से उस की दया भी ना बढ़ती है।

मगर वह बहुत बेचैन रात रही। जो कुछ सराय मालिक ने कहा, अदोनिराम उसके बारे में सोचता रहाः वह अजनबी शायद मरने की स्थिति में है। और क्या वह तैयार है? अकेला है और आधी रात है। उस प्रश्न से उसने शर्मिंदगी महसूस की; उसका तत्वज्ञान और दर्शन के छिछलेपन को वह साबित कर रहा था। ऐसी बचपना के विचार के बारे में, बहुत बुद्धिमान और शातिर ईम्स क्या कहेगा? मगर फिर भी, उसके विचार फिर से उस बीमार आदमी की तरफ मुड़ गये। क्या वह ईसाई है? अमरता की आशा में है? या फिर अंधकारमय, अगम्य भविष्य के कगार पर खड़ा थरथराता एक इनसान है? शायद हो सकता है वह एक 'स्वतंत्र-विचारों' वाला हो, या मसीही माता पिता द्वारा शिक्षित है जिसके विषय में उसकी माँ ने बहुत प्रार्थना और विनती की हो। हाँलाकि उससे बचने के लिए उसने बहुत कोशिश की, लेकिन अपनी कल्पनाओं में अदोनिराम ने अपने आप को उस मरण शैय्या पर रखने में मजबूर हो गया।

अंततः सवेरा हुआ और अदोनिराम मालिक को ढूंढ़ते हुए गया। उस साथ ठहरे आदमी के बारे में पूछा। 'वह मर गया।' जवाब आया, 'मर गया!' हाँ, वह चल बसा, बेचार आदमी। डॉक्टर ने कहा था कि वह रात भर भी जीवित नहीं रह पायेगा। 'क्या आप जानते हो कि वह कौन है?' 'हाँ, क्यों नहीं, प्रॉविडेन्स कॉलेज का एक छात्र – एक कुशल नौजवान; उसका नाम ईम्स है।'

जडसन, हक्का-बक्का रह गया –

वह उसका पुराना दोस्त था! कुछ घंटों के बाद फिर अपने सफर पर निकल पड़ा। मगर एक ही विचार उसके मन में गूँज रहा था और वह शब्द - मर गया! खो गया! खो गया! उसके कानों में गुँजते रहें। वह जानता था कि बाइबल का धर्म सच्चा है। उसकी सच्चाई को उसने महसूस किया था और वह अब मायूसी में है। अपनी यात्रा की योजना को छोड़कर तुरन्त प्लीमेत की ओर रवाना हुआ। उस साल, बाद में उस ने एन्डोवर सेमिनरी में प्रवेश पाया। 2 दिसंबर, 1808 को उसने अपने को गंभीरता से परमेश्वर को समर्पित किया।

स्वयं के लिए मरनाः यीशु मसीह का एक जन बननाः

सन 1809, सितंबर में नौजवान जडसन, विदेशों में शिविरों की स्थापना यानी दूसरे देशों में जाकर यीशु मसीह के बारे में लोगों से बाँटने की उन विदेशी मिशन के बारे में वह सोचने लगा। पूर्व में, ईसाई धर्म के दिव्य सामर्थ के सबूत के विषय में एक संदेश ने उनके मन पर बहुत जोरदार प्रभाव डाला है। जंगल में लम्बे दूर चलते, प्रार्थना और ध्यान करते समय, इस विषय के बारे में वे सोच रहे थे। जब वह लगभग इस विचार को छोडने पर था, उस के मन में बहुत स्पष्ट और शक्तिशाली रूप से यीशु की, यह आज्ञा प्रकट हुई – 'तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो।' इतनी स्पष्ट कि उस आज्ञा का पालन करने के लिए उसने निर्णय किया।

सन 1810 में पूर्व में मिशनरी सेवा के लिए जडसन और अन्य कई लोगों ने अपने आप को पेश किया। बाद में, जिस युवती को वह चाहने लगा था, उसके पिताजी से युवती का हाथ माँगने के लिए उन्होंने एक चिट्ठी लिखा थी। जो कठिनाइयों का सामना हो सकता है उनको उल्लिखित करते, विनती कियाः 'क्या इन सब के लिए आप सम्मति देंगे, उनके खातिर जो अपना स्वर्गीय निवास छोडा है, उसके लिए और आप के लिए अपना प्राण दिया है; नाश होती आत्माओं के खातिर, अविनाशी प्राणों के खातिर, सिय्योन के खातिर और परमेश्वर की महिमा के लिए?' उस नवयुवती 'ऐन्न' के पिताजी ने निर्णय ऐन्न पर छोड़ दिया। 'परमेश्वर अपनी दूरदर्शित में मुझे कहाँ रखना उचित समझते है वहाँ जाने का' ऐन्न ने दृढ़ संकल्प किया।

सन 1813 में, दोनों पति पत्नी रंगून, बर्मा (अब मयनमार) पहुँच गये। उन दोनों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना था। 1824 में उसको कैद किया गया था। जैल से रिहा होने के बाद ग्यारह महीनो तक उसकी पत्नी बहुत त्याग से उसका देखभाल करते चल बसी। बाद में उनकी बेटी भी चल बसी। आदोनिराम आध्यात्मिक रूप से बहुत वीरान महसूस कर रहा था – बहुत मेहनत करके उसने बर्मी भाषा सीख ली थी, एक शब्दकोश का प्रकाशन किया, बाइबल का बर्मी भाषा में अनुवाद किया और मसीह के लिए आत्माओं को जीत लिया। सन 1829 में आदोनिराम अपने भाई की मौत का खबर के कारण उस अंधकार से उभरकर आया क्योंकि, उसने विश्वास किया था कि उसका भाई विश्वास में मरा है। सन 1831 बर्मा में, आध्यात्मिक रुचि से, दिल में बोझ लिए लोग विचार करने लगें। हजारों पूछ-ताछ करने लगे, 'क्या आप ही वो यीशु मसीह के जन हो?' 'हमें कोई लेखन दो जो हमें यीशु मसीह के बारे में बतादे।'

इन-गिने कुछ ही हैं, जो मुश्किल से पूरी तरह मरते हैं।

सन 1850 में अदोनिराम अपनी अन्तिम यात्रा पर निकल पड़े जो वे कभी पूरा नहीं कर पायेंगे। 12 अप्रैल को वह चल बसे और उनकी शव पेटी को समुन्दर में दफना दिया गया। उनके अन्तिम शब्दों में से ये थे '---- कितने कम लोग है जो ... पूरी तरह से मरते हैं!' इस दुनिया में उनके जीवन का अन्त हो गया। और उनकी पीड़ा और त्याग के कारण – उपर्युक्त वर्णित कष्टों से बहुत बढ़कर उन्होंने कष्ट सहा – मसीह ने कई बर्मी लोगों को अपनी ओर खींच लिया।

- ई सी जडसन, अदोनिराम जडसन, डी.डीः हिस लाईफ एण्ड लेबर्स और जॉन पैपर, अदोनिराम जडसन: हौ फ्यू देर आर हू डै सो हार्ड! देखें।

यीशु के धन्य वचन!

मत्ति (5:3-12)

3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।

5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।

12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥